अलिराजपुर। मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु .माधुरी बहन।

फैजपुर। महामण्डलेश्वर जनार्दन हरिजी महाराज को सम्मान पत्र देते हुए ब्र.कु .शकुन्तला साथ में ब्र.कु .मीरा तथा अन्य ।

फरीदाबाद। हरियाणा के कैबिनेट मंत्री भूपेन्द्र प्रताप सिंह को ओंमशाति मिडिया द्वारा सेवाओं की गतिविधि समझाते हुए ब्र.कु . कौशल्या।

मुजफ़्फरपुर। कुलपति आर के मित्तल को परमात्मा परिचय की प्रर्दशनी समझते हुए ब्र.कु .पदमा बहन।

वाराणासी-बहरडिहा। रेल्वे कारखाना के प्रबंधक बी.पी. खरे को गुलदस्ता देकर स्वागत करते हुए ब्र.कु.सरोज , ब्र.कु. चंदा।

संगमनेर। एक शाम प्रभु के नाम कार्यक्रम में उपनगराध्यक्षा पुनमताई मुंदडा स्वागत करते हुए ब्र.कु.अनिता तथा ब्र.कु. अविनास।

विचारों का...

- पेज 6 का शेष

है। उसमें पोषणकारी आध्यात्मिक शक्ति का प्रवाह कम हो जाता है और एक निश्चित समयावधि में उस अंग में कोई-न-कोई रोग लग जाता है दूसरी तरफ जो व्यक्ति अधिकतम समय सकारात्मक चिन्तन करता है उसके चारों तरफ का प्रकाश घेरा रजतमय हो जाता है । ऐसे व्यक्ति को सब पसन्द करते हैं और वह सभी सात मूल शक्तियों के प्रकम्पन को चारों तरफ फैलाता है। दूसरे लोग जो उसके सम्पर्क में आते हैं इन शक्तियों को सुखकारी प्रभाव अपने पर भी महसूस करते हैं। सकारात्मक मानसिक शक्ति से मन का शू (सम्बन्ध) खुल जाता है परिणामस्वरूप शरीर के विभिन्न अंगो, विशेषकर पीड़ित अंग के लिए, शक्ति के प्रवाह का अवरोध हट जाता है और बीमारी से शीघ्र मुक्ति हो जाती है।

मन और तन का गहरा सम्बन्ध है। विचार केवल प्रकम्पन ही नहीं हैं,वरन,वे मस्तिष्क में हाइपोथेलामस में पैदा होने वाले रसायन हैं। अनेक शोध कार्यो के बाद यह सिद्ध हो गया है कि मन के ये विचार रासायनिक तत्व में बदल जाते हैं जिसे न्यूरोपेपटाइज कहा जाता है। इनकी रासायनिक तौर पर पहचान करली गई है। ये न्यूरोपेपटाइज खून के साथ शरीर के हर अवयव तक जाते हैं और प्रत्येक अवयव इन्हें स्वीकार करता है । (शरीर में 50,70 ट्रीलियन अवयव हैं) ये न्यूरोपेपटाइज मस्तिष्क की तरफ से सन्देशवाहक का कार्य करते हैं और हर अवयव को इनका सन्देश मानना पड़ता है। इस प्रकार न्यूरोपेपटाइज के माध्यम से मस्तिष्क हर अवयवसे बात करता है और ये अवयव भी एक दूसरे से बात करते हैं। मन (सूक्ष्म शरीर) में किस बात के विचार भरे हैं, उनके प्राभव से स्थूल शरीर बच नहीं पाता है। यदि मन में नकरात्मकता है तो हाइपोथेलामस में नकारात्मक न्यूरोपेपटाइज पैदा होते हैं वेशरीर के हर अवयव तक जाते हैं। विशेषकर पीड़ित अंग तक और अनेक प्रकार के तनाव-हारमोन्स का स्राव हो जाता है। जैसे अपिनफरीन, नॉरअपिनफरीन, कोरटीसोल , आदि और सिम्पेथेटिक डोमिनेस जो बीमारी का कारण बनते और शक्ति को जला देते है। दूसरी तरफ यदि हम सकारात्मक विचार पैदा करते हैं। तो इण्डोरफिन्स ,इनसेफालिनस , मेलाटोनिन पारासिम्पेथेटिक डोमिनेन्स पैदा होते हैं जो प्रसन्नता और स्वास्थ्य की ओर ले जाते हैं तथा शक्ति जमा करते हैं

बुद्धि-निर्णय शक्ति है। राज़योग के अभ्यास से बुद्धि युक्तियुक्त बन जाती है और हम उचित निर्णय लेना सीख जाते हैं।

संस्कार - बार -बार किये गये संकल्प, वाणी और कर्म, संस्कार का निर्माण करते हैं। यदि कोई बार-बार क्रोध करता है तो वह क्रोधी बन जाता है और जो बार-बार दान देता है तो वह दानशील कहलाने लगता है इस प्रकार आज हम जो भी कुछ उसकी आधारशिला हमारे विारों द्वारा ही रखी गई है।

जीवन जीने की सम्पूर्ण विधि

भगवान ने यहाँ बतलाया है कि जीवन जीने की सम्पूर्ण विधि क्या है ? उस जीवन जीने के लिए कौन सी चीज़, मनुष्य जीवन में किस प्रकार से होनी चाहिए। भगवान ने सोलहवें और सत्रहवें अध्याय में यह स्पष्ट किया कि सतो, रजो, तमो प्रकृति के ये तीन गुण और उससे मनुष्य आत्मायें किस प्रकार प्रभावित हो जाती है। जिस प्रकृति का प्रभाव विशेष होता है, वैसी ही उसकी आंतरिक प्रकृति बनने लगती है और उसी के क्रम में भगवान ने तीन प्रकार के यज्ञ बताए है और इनकी विवेचना की है, तीन प्रकार की तपस्या बतायी है, तीन प्रकार के दान बताए और तीन प्रकार के भोजन बताए हैं।

अठाहरवें अध्याय के अंदर और आगे के जीवन के अंदर जो विशिष्ट बातें हैं कि तीन प्रकार की बुद्धि, तीन प्रकार का त्याग, तीन प्रकार के सुख, तीन प्रकार की धारणा की शक्ति, तीन प्रकार के कर्म अर्थात् किस प्रकार का जीवन हमें जीना है, ये हमें खुद निश्चित करना होगा। यदि हमें एक सात्विक जीवन जीना है, तो हमारी बुद्धि कैसी होनी चाहिए? हमारी धारणा शक्ति कैसी होनी चाहिए? हमारे कर्म कौन-से होने चाहिए और उससे उपलब्ध सुख किस प्रकार का होता है? इस प्रकार की तीन-तीन बातों को और स्पष्ट किया है। सारांश में जीवन जीने की विधि बतायी है। अठारहवां अध्याय पूरे सत्रह अध्यायों का सार है। सन्यास की परम सिद्धि क्या है, उसको भी स्पष्ट किया है। सन्यास का मतलब ये नहीं कि सब कुछ छोड़ देना, अपने कर्त्तव्य को छोड़ना, अपनी जिम्मेदारियों को छोड़ना, उसको सन्यास नहीं कहा जाता है।

मनुष्य के अंदर रही हुई आसुरी वृत्तियों का सन्यास, इसकी विशेष प्रेरणा दी है। यहाँ त्याग का अर्थ और मानवीय चेतना तथा कर्म पर प्रकृति के गुणों का प्रभाव समझाते हैं। इस अध्याय में वर्णित संकेत हमारे आंतरिक व्यक्तित्व का बोध कराते है कि किस प्रकार के व्यक्तित्व को हमें अपने भीतर से निर्माण करना है और समय प्रति समय हम इन सूचकों के आधार पर अपने व्यक्तित्व का अवलोकन करें कि ये सात्विक हैं, राजसिक हैं या तामसिक हैं। उसके आधार पर स्वयं का परिवर्तन करें।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

श्रीमद्भगवद्गीता की महिमा तथा उसके स्तर का वर्णन इस प्रकार समझते हैं। धर्म का सर्वोच्च मार्ग परमात्मा की शरणागति है अर्थात् स्वयं को समर्पित कर देना अर्थात् स्वयं को समर्पित भाव में ले आना है। जो पूर्ण प्रकाश प्रदान करने वाला है, और मनुष्य आत्मा को वापिस जाने की समर्थी प्रदान करता है, कि किस प्रकार की समर्थी आत्मा में होनी चाहिए।

इसमें पहले श्लोक से लेकर बारहवें श्लोक तक संन्यास और त्याग का आधार और उनके प्रकार बताये हैं। तेरहवें श्लोक से लेकर सत्रहवें श्लोक तक कर्म की सिद्धि में पाँच कारण बताए हैं। अठारहवें श्लोक से लेकर अट्ठाइसवें श्लोक तक ज्ञान, कर्म और कर्त्ता गुण भेद के तीन प्रकार बताए हैं। उन्तीसवें श्लोक से पैंतीसवें श्लोक तक बुद्धि और धारणा के तीन प्रकार बताए हैं। छत्तीसवें श्लोक से उन्चालीसवें श्लोक तक तीन प्रकार के सुखों का वर्णन किया गया है। चालीसवें श्लोक से लेकर अड़तालिसवें श्लोक तक वर्ण धर्म के स्वभाव जन्य कर्म बताए गए हैं। उन्चासवें श्लोक से लेकर ५४ वें श्लोक तक स्वधर्म युक्त कर्म और ज्ञान की पराकष्ठा का आधार बताया गया है। पचपनवें श्लोक से लेकर के छियासठवें श्लोक तक परमात्मा के निर्देश अनुसार कर्म और शरणागति को स्पष्ट किया गया है। सड़सठवें श्लोक से लेकर के तिहत्तरवें श्लोक तक गुह्य गीता ज्ञान का महत्व और उसकी उपलब्धि स्पष्ट की गई है। इस तरह से अठाहरवां अध्याय सम्पूर्ण गीता में सबसे बड़े ते बड़ा अध्याय है। जिसके अंदर कुल में ७८ श्लोक हमारे सामने हैं।

भगवान से अर्जुन पूछता है कि संन्यास और त्याग का यथार्थ स्वरूप क्या है ? इन दोनों के बीच का अंतर स्पष्ट करने के लिए उसने प्रार्थना की। भगवान कहते हैं - त्याग तीन प्रकार के हैं। यज्ञ, दान और तप। ये कर्म त्याग करने के योग्य नहीं है। इंसान को त्याग क्या करना चाहिए, किस बात का संन्यास करना चाहिए ये ज्ञान होना बहुत जरूरी है। जो विशेष जीवन के अंदर उपयोगी चीजें हैं। उसका त्याग करने की बात कही है। यज्ञ, तप और दान ये तीनों कर्म त्याग करने के योग्य नहीं है, क्यों ? क्योंकि ये मनुष्यों को भी पवित्र करने वाले हैं। नियत कर्म को कर्त्तव्य समझकर इसमें आसक्ति और फल को त्यागना ये सात्विक त्याग है अर्थात् हर जगह संपूर्ण गीता के अंदर यह बात हमनें बार-बार सुनी है कि आसक्ति का त्याग करो। जो फल है वो परछाई की तरह हर कर्म के साथ जुड़ा हुआ ही है। फिर फल की कामना करना या उससे अधिक की कामना करने से, क्या वो प्राप्त हो जायेगा। कर्म हम थोड़ा करें और फल अधिक चाहे, तो क्या ये मिलेगा ? अरे, जो परछाई जैसी होगी उसी अनुसार वो प्राप्त होना है। उसकी इच्छा को लेकर के कर्म करना, ये तो यथार्थ नहीं है। इसमें हम अपने विचारों की शक्ति को यूं ही व्यर्थ गँवा रहे हैं। जिसने जितनी भावना से जैसा कर्म किया, उसका फल वैसे ही उसके साथ जुड़ जाता है। चाहे आप इच्छा करो या न करो। ये जुड़ा हुआ ही है। उससे अधिक इच्छा करने पर वो मिलने वाला नहीं है क्योंकि कर्म का प्रमाण जितने में होगा, उसी अनुसार वो मिलना है। (क्रमशः)